पाठ 16. वीरसिंह डरपोक

पाठ का परिचय

बोदा महाशय बुद्धू तो थे पर बुद्धू कहे जाने से बेहद चिढ़ते थे। उन्हें अपने नाम से भी चिढ़ थी। उन्होंने एक रोज़ पल्टूराम पुरोहित से, जिन्होंने उनका नामकरण किया था, यह जानना चाहा कि क्या नाम को बदला नहीं जा सकता। पुरोहित जी ने कर्म करके नाम को बदलने की सलाह दी। बोदा महाशय ने कर्म करके अपना नाम वीरसिंह करने का निश्चय किया। जब उन्हें यह पता चला कि बाज़ार में पागल भैंसा घुस आया है तो वे बिना रुके बाज़ार पहुँच गए और भैंसे से भिड़ पड़े। भैंसे से लड़ने में उन्हें चोट तो आई लेकिन नाम बोदा से वीरसिंह पड़ गया। एक बार मुहल्ले के बच्चों ने उनकी वीरता की परीक्षा लेनी चाही और एक नकली साँप उठाकर वीरसिंह के ऊपर फेंक दिया। वीरसिंह डर से थरथर काँपने लगे। उनकी वीरता की झूठी शान वहीं समाप्त हो गई और वह 'वीरसिंह डरपोक' कहलाने लगे।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हम जैसे हैं वैसे ही हमें रहना चाहिए। झूठी शान व झूठा दिखावा कभी नहीं करना चाहिए। ऐसा करने पर कभी-कभी लेने के देने पड़ जाते हैं। जो जैसा है वह सदा वैसा ही रहेगा।

पाठ का वाचन

कहानी का कक्षा में हाव-भाव सहित वाचन करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। बच्चों से कहानी का एक-एक अनुच्छेद पढ़ने को कहें। उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दें। कहानी के आखिरी अंश को संवाद-शैली में लिखने को कहें। संवाद-शैली में लिखे अंश का मंचन बच्चों को कक्षा में करने को कहें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित बिंदुओं पर बच्चों से चर्चा करें –

- बोदा महाशय के चरित्र पर चर्चा करें।
- ऐसे किसी अन्य चरित्र के बारे में, यदि बच्चे जानते हैं तो उन्हें बताने को कहें।
- कर्म के द्वारा नाम को बदला जा सकता है या नहीं, इस विषय पर बच्चों के विचार जानें व अपने विचार बताएँ।
- उन्हें उन पलों के बारे में बताने को कहें जब उन्होंने केवल दिखाने के लिए वीरता का ढोंग रचा हो।
- बच्चों से जानें कि उन्हें अपना नाम पसंद है या नहीं? तर्कसहित बताएँ।